दूसरी नज़र

■ पी चिदंबरम

समावेशी बनें या न बनें

इस महीने की 17 तारीख को मध्यप्रदेश के खरगौन में एक रैली को संबोधित करते हुए नरेंद्र मोदी ने कहा, कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कामरूप तक, पूरा देश यह कह रहा है, 'अब की बार 300 पार, फिर एक बार, मोदी सरकार'। उनका चुनाव विश्लेषण एकदम सटीक निकला, लेकिन भूगोल गलत। आखिरी नतीजे बताते हैं कि उनके चुनावी गणित को पूरे दस नंबर मिलने चाहिए। लिहाजा, मोदी, भाजपा, पार्टी के लाखों कार्यकर्ता और सहयोगी बधाई के पात्र हैं। अब जबकि वे दूसरा कार्यकाल शुरू करने जा रहे हैं, मेरी कामना है कि प्रधानमंत्री सफलता से जनता की सेवा में सरकार चलाएं।

परिणाम पूर्व नतीजे इसके दो दिन बाद, 19 मई को आए और उनमें कम से कम दो पूरी तरह सटीक थे : भाजपा को 300 सीटें, सहयोगी दलों को मिला कर 350 और कांग्रेस को लगभग 50 सीटें। इन दो सर्वेक्षणों ने सांख्यिकीय नमूनों और चुनावी पूर्वानुमान में जनता के भरोसे को थोड़ा-बहुत बहाल किया।

प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण

एक और यात्रा आज शुरू हुई है। यह अनवरत यात्रा है। हर पांच वर्ष के अंतराल पर छोटा-सा विश्राम और यात्रा पुनः शुरू। भारत पर शासन करने के अधिकार को लेकर विभिन्न पार्टियों में मतभिन्नताएं रही हैं और आगे भी रहेंगी। ये मतभिन्नताएं किसी भी बहुदलीय लोकतंत्र की पहचान हैं, खासकर बहुलवादी और विविधतावादी जीवंत लोकतंत्र की। एक पार्टी, विविधताओं को स्वीकार करने से इनकार करने के बावजूद यदि राष्ट्रीय चुनावों में विजय प्राप्त करती है, तो इसका मतलब यह नहीं होता कि विविधताएं वास्तविक नहीं हैं।

भारत के लिए भाजपा की दृष्टि है : एक देश, एक इतिहास, एक विरासत, एक नागरिक संहिता, एक राष्ट्रभाषा और 'एकात्मता' के विभिन्न अन्य आयाम। कांग्रेस का नजरिया अलग है : एक देश, इतिहास की विविध व्याख्याएं, विविध उप-इतिहास, विभिन्न संस्कृतियां, विभिन्न भाषाएं और विविधता के तमाम अन्य आयाम, जो एकता की आकांक्षा को पूरा करते हैं। क्षेत्रीय दलों का अपना दृष्टिकोण है : यद्यपि इनका नजरिया हर राज्य में अलग-अलग हो सकता है, लेकिन एक चीज उनके सभी राजनीतिक वक्तव्यों में समान दिखती है : राज्य के लोगों का इतिहास, भाषा और संस्कृति सर्वोच्च सम्मान की अधिकारी है और खासतौर से राज्य की भाषा को पुष्पित-पल्लवित करते हुए उसे प्रमुखता दी जाए।

भाषा की प्रासंगिकता

भाषा खासतौर से एक भावनात्मक मुद्दा है। संस्कृति, साहित्य, कला और लोगों के जीवन के प्रत्येक पहलू भाषा के इर्द-गिर्द ही घूमते रहते हैं। यह सिर्फ तमिल लोगों के बारे में नहीं, बल्कि उन तमाम लोगों जो तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, उड़िया, बांग्ला और जहां तक मैं समझता हूं, यह कोई भी प्राचीन भाषा बोलने वाले सभी लोगों के बारे में सच है। राजनीति में और खासकर राजनीतिक संवाद में भाषा की प्रासंगिकता को खारिज नहीं किया जा सकता।

तमिल लोगों के बारे में थोड़ा ठीक-ठाक जानता हूं। भाषा उनकी सभ्यता और संस्कृति के मूल में है। तमिल बोलने वाले तमिझन की पहचान तमिल है। कर्णाटिक संगीत के तीन महान संगीतकार तमिलनाडु में जन्मे और उन्होंने अपनी रचनाएं संस्कृत और तेलुगु में लिखी। तमिल गौरव और उसके प्राधान्य की प्रतिष्ठा के लिए ही तमिल साई (संगीत) आंदोलन का जन्म हुआ। मंदिरों में अर्चनाएं संस्कृत में की जाती थीं और अब भी यह भाषा ज्यादातर मंदिरों के अर्चकों और श्रद्धालुओं की पहली पसंद है; सरकार ने विकल्प के रूप में तमिल में अर्चना का प्रावधान किया और इन नीति को सभी लोगों ने स्वीकार किया। हिंदू धर्म, जिसे आज हम इस रूप में जानते हैं, वह शैव और वैष्णव था और तमिल इतिहास और धार्मिक साहित्य में इसे इसी रूप में दर्ज किया गया है। वस्तुतः तमिल क्लैसिक उत्कृष्ट साहित्य का एक उदाहरण होने के अलावा धर्म की भी धुरी थे। इसके अतिरिक्त तमिल साहित्य को समृद्ध करने में ईसाई और मुसलिम विद्वानों एवं लेखकों का भी महती योगदान है।

यहां तमिलों और तमिल भाषा के बारे में मैंने जो कहा वह केरल, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल के लोगों और उनकी भाषाओं के बारे में भी उतना ही सत्य है। अपने किसी मित्र से पूछ लें।

अब मुझे विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोणों पर लौटने दें। 2019 चुनाव के नतीजों को यह नहीं माना जा सकता कि यह अन्य नजरियों पर एक निर्णायक विजय है। इससे भी ज्यादा सच यह है कि धर्म कभी भी भाषा और संस्कृति पर प्रभुत्व स्थापित नहीं कर सकता।

इक्कीसवीं सदी में धर्मनिरपेक्ष

धर्मनिरपेक्ष राज्य की अवधारणा भारत में नहीं जन्मी। यह किसी भी आधुनिक लोकतंत्र और गणराज्य की कसौटी है और इसके सर्वश्रेष्ठ उदाहरण यूरोपीय देश हैं। कोई यह नहीं कह सकता कि यूरोपीय देशों के लोग अधार्मिक हैं, लेकिन वे अपनी राजनीति और शासन प्रणाली में धर्मनिरपेक्षता के प्रति दृढ़प्रतिज्ञ हैं। वास्तव में धर्मनिरपेक्षता का मूल अर्थ ही है, 'धार्मिक और आध्यात्मिक मामलों से अलगाव'। कालांतर में, खासतौर से यूरोप में इसका अर्थ हो गया राज्य और चर्च के बीच अलगाव। आजकल, खासतौर से बहुलवादी और विविधतावादी समाजों में धर्मनिरपेक्ष का अर्थ हो गया है किसी भी तरह के अतिवाद से दूरी और समावेशी होना। यहां मेरी सारी दलीलों के मूल में यह है कि भारत- भारत सरकार और शासन प्रणाली के तमाम संस्थान- हमेशा और हर हाल में समावेशी बने रहें।

हाल ही में संपन्न हुए चुनावों में क्या समावेशन के लिए कोई मुद्दा था? मुझे संशय है। कई खबरों के अनुसार भाजपा के 302 सांसदों में मुसलिम समुदाय से कोई सांसद नहीं होगा। दलित, आदिवासी, बंटाई पर खेती करने वाले और खेतिहर मजदूरों जैसे कई और भी तबके हैं, जिन्हें लगता है कि उन्हें उपेक्षित छोड़ दिया गया है। बहुत से ऐसे तबके हैं, जिन्हें जाति, गरीबी, अशिक्षा, बुढ़ापे, कम संख्या या सुदूर होने की वजह से वास्तव में विकास की प्रक्रिया से बाहर छोड़ दिया गया है। इस कारण से मुझे लगता है कि प्रधानमंत्री को अपने पुराने नारे 'सबका साथ, सबका विकास' को एक बार फिर दोहराने की आवश्यकता है।

मुझे डर है कि भाजपा यह चुनाव एक विलगाववादी एजंडे के साथ लड़ी। मुझे उम्मीद है कि शासन की प्रक्रिया समावेशी होगी।

आसमान में बढ़ती ताकत

योगेश कुमार गोयल

देश की पहली परमाणु पनडुब्बी 'आईएनएस अरिहंत' के अपना पहला गश्ती अभियान पूरा करने के साथ ही भारत जल, थल और नभ तीनों में परमाणु हमला करने में संपन्न राष्ट्र होने का गौरव हासिल कर चुका है। अरिहंत के जरिए जमीन और आसमान के अलावा पानी के अंदर भी मार संभव है। आईएनएस अरिहंत के बाद दूसरी परमाणु पनडुब्बी आईएनएस अरिधमान भी लगभग तैयार है, जिसके इसी साल राष्ट्र को समर्पित किए जाने की संभावना है। इसी तरह वायुसेना को भी लगातार मजबूत बनाया जा रहा है। भारतीय वायुसेना दुनिया की चौथी सबसे बड़ी वायुसेना है, जो हवाई सुरक्षा तथा वायु सीमा की चौकसी का कार्य करती है।

फरवरी में एयर स्ट्राइक के जरिए भारतीय वायुसेना आसमान में बढ़ती अपनी ताकत का आभास करा चुकी है। 1985 में वायुसेना के बेड़े में शामिल हुए जिन फ्रांसीसी मिराज-2000 फाइटर जेट विमानों का एयर सर्जिकल स्ट्राइक के दौरान इस्तेमाल किया गया, वे 2495 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ने में सक्षम हैं और यह चतुर्थ पीढ़ी का बहुपयोगी एक सीट वाला ऐसा एकल इंजन लड़ाकू विमान है, जिसका इस्तेमाल यूएई एयरफोर्स के अलावा चीनी सेना भी कर रही है। यह आपातकाल में कहीं भी उतरने में सक्षम है और जमीन पर भारी बमबारी करने के साथ-साथ आसमान में उड़ान भरते दूसरे विमानों को अपना निशाना बनाने में भी सक्षम है। कम ऊंचाई पर भी बहुत तीव्र गति से उड़ते हुए यह जमीन पर दुश्मन के ठिकानों पर हवा से सतह पर मिसाइलों तथा हथियारों से बेहद सटीक हमला करने के साथ-साथ लेजर गाइडेड बम दागने में भी समर्थ है। करगिल युद्ध के दौरान वायुसेना के ऑपरेशन 'सफेद सागर' में भी मिराज विमानों ने नियंत्रण रेखा पार किए बगैर पांच सौ उड़ानें भर कर सटीक हमले करके पाकिस्तानी सीमा में पचपन हजार किलोग्राम विस्फोटक फेंक कर आतंकी शिविरों को तबाह कर दिया था। भारतीय वायुसेना के बेड़े में इस वक्त पचास मिराज विमान मौजूद हैं।

इसके अलावा सुखोई-30 भी वायुसेना को बेमिसाल ताकत प्रदान करते हैं। यह भारतीय वायुसेना का सबसे सक्षम लड़ाकू विमान माना जाता है। उड़ान भरने के दौरान आसमान में अगर इसका एक इंजन किसी तकनीकी खराबी के चलते बंद हो जाए तो दूसरे इंजन के सहारे यह अपना मिशन पूरा कर सकता है। भारतीय वायुसेना के बेड़े में 240 सुखोई विमान मौजूद हैं।

हिंदुस्तान एरोनाटिक्स लिमिटेड (एचएएल) द्वारा विकसित एक सीट और एक जेट इंजन वाला 'तेजस' एक साथ कई भूमिकाएं निभाने में सक्षम एक हल्का सुपरसोनिक युद्धक स्वदेशी विमान है, जो स्पीड, एक्सेलरेशन, गतिशीलता, फुर्ती के मामले में आधुनिक युद्धक विमानों को देखते हुए बनाया गया है। यह दुनिया के सबसे बेहतरीन लड़ाकू विमानों में से एक है, जो वायुसेना में पुराने पड़ रहे मिग-21 लड़ाकू विमानों की जगह लेगा। दुनिया के कई देशों की दिलचस्पी भारत में निर्मित इस विमान में बढ़ी है। हल्के वजन का होने के साथ-साथ उच्च सीमा की फुर्ती वाला यह ऐसा सुपरसोनिक विमान है, जो चार टन वजनी टैंकों और विभिन्न प्रकार के भारी हथियारों को ले जाने में भी सक्षम है। तीन हजार किलोमीटर की रेंज वाला यह विमान लेजर गाइडेड हमले करने में सक्षम है।

वायुसेना के पास एक सौ बीस जगुआर लड़ाकू विमान भी मौजूद हैं, जो कम ऊंचाई पर उड़ने वाले सुपरसोनिक लड़ाकू विमान हैं, जिनके हाई-विंग लोडिंग डिजाइन के कारण कम ऊंचाई पर एक स्थिर उड़ान भरने तथा जंगी हथियार ले जाने में सुविधा होती है। यह विमान सत्रह सौ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ सकता है। इस विमान में साढ़े चार हजार किलोग्राम वजन तक के हवा से हवा में हमला करने वाले और हवा से जमीन पर हमला करने वाले रॉकेट सहित कई प्रकार के हथियार लोड किए जा सकते हैं। फ्रांस में बना दो इंजनों वाला कम ऊंचाई पर उड़ान भरने में सक्षम जगुआर दुश्मन की सीमा में काफी अंदर तक घुस कर हमला कर सकता है।

सुखोई का छोटा भाई कहे जाने वाले सत्तर मिग-29 लड़ाकू विमान भी भारतीय वायुसेना की ताकत बढ़ा रहे हैं, जो अपग्रेड किए जाने के बाद और भी घातक हो गए हैं। अब इन विमानों को ईंधन भरने के लिए नीचे उतारने की जरूरत नहीं, बल्कि रिफ्यूलिंग अब आसमान में ही हो सकती है। मिग-29 का अपग्रेडेड वर्जन नई अत्याधुनिक मिसाइलों से लैस है, जो कई दिशाओं में हमले कर सकता है। बहुत जल्द राफेल भी वायुसेना को बेमिसाल ताकत प्रदान करने के लिए भारतीय वायुसेना के बेड़े में शामिल होने जा रहा है। यह दो इंजन वाला मध्यम मल्टी रोल कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एमएमआरसीए) है, जिसमें कई ऐसी विशेषताएं हैं, जो इसे विश्व का बेहतरीन लड़ाकू विमान बनाने के लिए पर्याप्त हैं।

इन लड़ाकू विमानों के अलावा पिछले कुछ समय में कुछ विशेष लड़ाकू हेलीकॉप्टरों को भी वायुसेना में शामिल किया गया है। 120 एमआई-17 तथा 36 एमआई-25 रूसी लड़ाकू हेलीकॉप्टर पहले से ही वायुसेना के पास हैं और कुछ समय पूर्व वायुसेना को अमेरिका में निर्मित दुनिया भर के कई प्रमुख देशों में लोकप्रिय 'चिनूक' हेलीकॉप्टर भी प्राप्त हुए, जो ऐसा पहला अमेरिकी हेलीकॉप्टर है, जो बहुत अधिक वजन उठाने में सक्षम है। यह बख्तरबंद गाड़ियां, यहां तक कि 155 एमएम की होवित्जर तोप को लेकर भी उड़ सकता है। यह वही हेलीकॉप्टर है, जिसके जरिये अमेरिका ने पाकिस्तान में छिपे दुर्दांत आतंकवादी उसामा बिन-लादेन को मौत की नींद सुलाया था। यह बहुउद्देश्यीय हेलीकॉप्टर बहुत तेज गति से बीस हजार फीट की ऊंचाई तक उड़ान भरने में सक्षम है और इसका इस्तेमाल दुर्गम तथा अत्यधिक ऊंचाई वाले स्थानों पर सेना के जवानों, हथियारों, मशीनों तथा अन्य प्रकार की रक्षा सामग्री ले जाने में आसानी से किया जा सकता है।

प्रतिरक्षा

वायुसेना के बेड़े में इस तरह के हेलीकॉप्टरों और विमानों की मौजूदगी से सशस्त्र सेनाओं का मनोबल तो बढ़ेगा ही, वायुसेना भी अत्याधुनिक बनेगी, जिसकी आज के युद्धक माहौल में सख्त जरूरत है।

पिछले दिनों वायुसेना के बेड़े में बोइंग एएच-64ई अपाचे गार्जियन अटैक हेलीकॉप्टर भी शामिल हुआ, जो ऐसा अग्रणी बहुउद्देश्यीय लड़ाकू हेलीकॉप्टर है, जिसका इस्तेमाल भारतीय सेना में विशुद्ध रूप से हमले करने में ही किया जाएगा। इसकी फ्लाइंग रेंज करीब साढ़े पांच सौ किलोमीटर है। कम ऊंचाई पर उड़ने की क्षमता वाला 16 एंटी टैंक मिसाइल छोड़ने की क्षमता से लैस यह हेलीकॉप्टर पहाड़ी क्षेत्रों में छिप कर वार करने और आसानी से दुश्मन की किलेबंदी को भेद कर उसकी सीमा में घुस कर बहुत सटीक हमले करने में सक्षम है। अपाचे दुनिया का सबसे आधुनिक और घातक हेलिकॉप्टर माना जाता है। तेज रफ्तार से दौड़ने में सक्षम इस हेलीकॉप्टर को रडार पर पकड़ना बेहद मुश्किल है। इन हेलीकॉप्टरों को भारतीय वायुसेना में शामिल करना वायुसेना के बेड़े के आधुनिकीकरण की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

कुछ माह पहले भारत ने रूस के साथ सैंतीस हजार करोड़ रुपए की लागत से एस-400 एंटी एयरक्राफ्ट मिसाइल प्रणाली का सौदा भी किया था। मल्टी फंक्शन रडार से लैस एस-400 दुनिया भर में सर्वाधिक उन्नत मिसाइल रक्षा प्रणालियों में से एक मानी जाती है, जो जमीन से मिसाइल दाग कर हवा में ही दुश्मन की ओर से आ रही मिसाइलों को नष्ट करने में सक्षम है और एक साथ छत्तीस लक्ष्यों तथा दो लांचरों से आने वाली मिसाइलों पर निशाना साध सकती है और सत्रह हजार किलोमीटर प्रतिघंटा की गति से तीस किलोमीटर की ऊंचाई तक अपने लक्ष्य पर हमला कर सकती है। इसकी रेंज चार सौ किलोमीटर है और यह छह सौ किलोमीटर की दूरी तक निगरानी करने की क्षमता से लैस है। यह किसी भी प्रकार के विमान, ड्रोन, बैलिस्टिक और क्रूज मिसाइल तथा जमीनी ठिकानों को चार सौ किलोमीटर की दूरी तक ध्वस्त करने में सक्षम है।

वायुसेना के बेड़े में इस तरह के हेलीकॉप्टरों और विमानों की मौजूदगी से सशस्त्र सेनाओं का मनोबल तो बढ़ेगा ही, वायुसेना भी अत्याधुनिक बनेगी, जिसकी आज के युद्धक माहौल में सख्त जरूरत है।

यह जीत उन्हें नहीं पच रही

वक़्त की नब्ज़

■ तवलीन सिंह

पिछले हफ्ते जब भारत के मतदाताओं ने स्पष्ट कर दिया प्रचंड बहुमत देकर कि उनको मोदी पसंद हैं, एक वर्ग था जो खुश नहीं था। इस वर्ग को नरेंद्र मोदी ने हाल में खान मार्केट गैंग का नाम दिया अपने एक इंटरव्यू में, लेकिन दिल्ली के दायरे से कहीं दूर तक है इस वर्ग का असर। इसलिए कि अंग्रेजों के जाने के बाद इस वर्ग के कब्जे में रहा है पूरा भारत। इस वर्ग के हाथ इतने लंबे हैं कि राजनीति और शासन से लेकर पुलिस और सेना तक है इनकी पहुंच। बुद्धिजीवी, बॉलीवुड के बड़े सितारे और मुंबई के बड़े उद्योगपति भी इनके असर में रहे हैं। इस वर्ग को आम भारतीय अंग्रेजों की औलाद कहते हैं, क्योंकि अंग्रेजी है इस वर्ग की मातृभाषा और इनको ताकत मिलती आई है नेहरू-गांधी परिवार की गुलामी करने से। लेकिन इस बात को ये छिपा कर रखते हैं समाजवाद, सेक्युलरिजम, उदारवाद जैसे शब्दों के कवच के पीछे।

जिस राजवर्ग को मोदी ने कमजोर किया है प्रधानमंत्री बनने के बाद, वह अभी तक स्वीकार नहीं कर पाया है कि भारत बदल गया है और इस नए भारत में उनको कभी वह जगह नहीं मिलने वाली, जो कभी उनकी थी।

इस वर्ग की शक्ति कमजोर होने लगी थी 2014 के आम चुनावों के बाद, जब एक चायवाले के बेटे ने साबित कर दिखाया कि लोकतंत्र का असली मतलब है कि एक चायवाले का बेटा भी बन सकता है देश का प्रधानमंत्री। ऐसा जब हुआ तो लोकतंत्र की बड़ी-बड़ी बातें करने वाले इस वर्ग के सदस्य थोड़ी देर के लिए खामोश हो गए, लेकिन बहुत थोड़ी देर के लिए। फिर लग गए नरेंद्र मोदी को हर तरह से बदनाम करने में। सो, जो लोग बिल्कुल चुप थे उस दौर में जब भारत में हर साल हुआ करते थे दंगे-फसाद, ऊंची आवाज में चिल्लाने लगे जब मोदी के दौर में गोरक्षकों ने मुसलमानों और दलितों पर हमले करना शुरू किए। हमले गलत थे और अगर मोदी के इस दौर में फिर से होने लगते हैं, तो उम्मीद करनी चाहिए हमें कि इस बार वे चुप नहीं रहेंगे, ताकि इस वर्ग को फिर से हावी होने का मौका न मिले।

वैसे ढूंढ़ लेंगे जरूर कोई न कोई दूसरा मुद्दा मोदी को बदनाम करने के लिए जैसे पिछले पांच सालों में हुआ है। कभी देश को बांटने का दोष लगाया मोदी पर, कभी रफाल में चोरी करने का, कभी लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करने का, तो कभी इतिहास की किताबों के साथ छेड़खानी करने का। ऐसा उन्होंने इसलिए किया, क्योंकि मोदी के आने के बाद उनको पहली बार अहसास हुआ है अपनी शक्ति के कमजोर होने का। इस लोकसभा चुनाव में उन्होंने अपनी तमाम उम्मीदें राहुल गांधी से जोड़ रखी थीं। मीडिया चूंकि उनके हाथों में है, सो पिछले कुछ महीनों में पूरी कोशिश की है इन्होंने राहुल गांधी को एक काबिल राजनेता के रूप में पेश करने की। इस प्रयास को उन्होंने और तेज किया जब राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ को राहुल गांधी ने जीत कर साबित किया कि कांग्रेस पार्टी उनके नेतृत्व में चुनाव जीत सकती है।

इस वर्ग की समस्या यह है कि असली भारत से उनका बहुत कम वास्ता रहता है, सो इनको जरा भी जानकारी नहीं थी मोदी की लोकप्रियता की। न ही उनको कभी मालूम पड़ा कि 'चौकीदार चोर है' जब कांग्रेस अध्यक्ष चिल्लाते फिरते थे, तो वे अपना नुकसान ज्यादा और मोदी का कम कर रहे थे। इस वर्ग की दूसरी समस्या यह थी कि उनको बिल्कुल नहीं मालूम था कि ग्रामीण भारत में आम लोगों के जीवन में कितना परिवर्तन आया है पिछले पांच सालों में। सड़कें बनी हैं वहां, जहां नहीं हुआ करती थीं। पक्के घर बने हैं, जहां कच्ची बस्तियां होती थीं। शौचालय और स्कूल बने हैं, पानी, बिजली और गैस पहुंची है उन गांवों में, जहां इन चीजों की कभी किसी को उम्मीद ही नहीं थी।

मोदी की लोकप्रियता का राज है इन योजनाओं की सफलता। लेकिन परिणाम आते ही इस अंग्रेजीभाषी भारत के दशकों से राज करने वाले वर्ग के बुद्धिजीवियों ने टीवी की चर्चाओं में कहना शुरू कर दिया कि मोदी जीते हैं नफरत और जहरीले किस्म का राष्ट्रवाद फैला कर। विदेशी पत्रकारों पर इस वर्ग की बातों का गहरा असर होता है, क्योंकि बातें करते हैं अंग्रेजी में ये लोग। सो, परिणाम आने के अगले दिन न्यू यॉर्क टाइम्स में एक लेख छपा, जो इस वर्ग के एक प्रसिद्ध लेखक ने लिखा, जिसमें लेखक ने साबित करने की कोशिश की कि मोदी की इतनी बड़ी जीत का एक ही कारण है और वह है हिंदुत्व के नाम पर जहरीला राष्ट्रवाद फैलाना।

भारतीय अखबारों में भी इस तरह के लेख छपने लगे हैं अभी से, क्योंकि जिस राजवर्ग को मोदी ने कमजोर किया है प्रधानमंत्री बनने के बाद, वह अभी तक स्वीकार नहीं कर पाया है कि भारत बदल गया है और इस नए भारत में उनको कभी वह जगह नहीं मिलने वाली, जो कभी उनकी थी। कभी उनके लिए लोकसभा भी एक क्लब था, जिसमें वे अपने कब्जे में रखा करते थे अपने चुनाव क्षेत्रों को निजी जायदाद बना कर अपने वारिसों के हवाले करके। इत्तेफाक नहीं है कि कांग्रेस पार्टी के आधे से ज्यादा नौजवान सांसद किसी राजनेता के वारिस हैं। इस बार ज्योतिरादित्य सिंधिया जैसे महाबली भी हार गए हैं। कोई इत्तेफाक नहीं है कि परिवारवाद को इस बार मतदाताओं ने नकारा है राजनीतिक राजकुमारों और राजकुमारियों को हरा कर।

परिणाम आने के बाद राहुल गांधी ने नम्रता और तहजीब से मोदी को बधाई दी। लेकिन थोड़ी ही देर में शुरू हो जाएंगे उसी किस्म के वार मोदी पर, जो उनके पिछले दौर में हुए थे। इसलिए कि जिस राजवर्ग और राजघराने को उन्होंने बेघर, बेहाल किया है वे इतनी आसानी से नहीं कबूल करेंगे कि 'नए भारत' में उनकी जगह अब वहीं है, जहां आम नागरिकों की होती है।

लटके हुए चेहरे

एक चुनाव प्राचीन विश्लेषक : प्रभु! आप जीत चुके हैं। अब आप उदार-हृदय होइए। झोलेवालों को लतियाना छोड़िए!

- प्रभु : जो बीत गई वो बात गई...

- अब तो जेएनयू-वाले को टुकड़े टुकड़े न कहिए!

- कह दिया न, पास्ट इज पास्ट! जो बीत गई वो बात गई!

परिणाम आने के बाद की एक चर्चा चल रही है। कई चीजों का ऐसा स्वाहा हुआ है कि त्राहि त्राहि का जाप होने लगा।

हारने वाले कई बार हारे। किश्तों में हारे और बार-बार हारे। हार के साथ कई तो अपनी तमीज तक हारे!

हारने वालों को सबसे पहले एक्जिट पोलों ने हराया!

जिसे जीतना था उसे सब एक्जिटों ने जिताया। कोई तीन सौ सीट देता, कोई साढ़े तीन सौ देता, कोई दो सौ पचास देता, तो कोई दो सौ देकर तसल्ली करता। लेकिन हां! दुर्भाग्य कि फिर भी सबकी एक ही राय कि सरकार बनेगी, तो मोदी की ही! मोदी आला रे आला!

मोदी का नाम आते ही फिर से लंबा रोना-बिसूरना जारी हो जाता और उच्चाटन मारण मंत्र पढ़े जाने लगते कि चाहे जो हो, वो न आ जाय!

इसके बाद 'उत्तर सत्य' यानी 'पोस्ट-ट्रुथ' गढ़े जाने लगे। इस बार मोदी सरकार नहीं बनने जा रही। यूपी में महागठबंधन 'स्वीप' कर रहा है, जाति का गणित ऐसा सटीक बैठा है कि भाजपा की हवाइयां उड़ रही हैं।

इसके आगे 'आल्ट ट्रुथ' खेला जाने लगा और एक से एक 'आल्ट पीएम' टीवी पर पेश किए जाने लगे : ये देखिए, ये रहा पीएम का मटीरियल नंबर वन। इसे तीन बार का सीएम का अनुभव है। और ये रहा 'जय काली कलकत्ते वाली' वाला मॉडल, जिसे दो बार सीएम का अनुभव है। और ये भी न जंचें तो ये रहे अपने आंध्र वाले भैया, जो सौ टंक पीएम का फर्स्ट क्लास मटीरियल हैं।

आह! एक्जिट पोल और परिणामों ने किसी की न सुनी। तीन दिन तक अपने बाईस 'आल्ट पीएम' अपनी खबरें बनाते रहे। एक दिन दिल्ली, दूसरे दिन लखनऊ, तीसरे दिन कोलकाता और हर जगह नए नए अंगवस्त्रम् पत्रम्-पुष्पम् यत्रम् तत्रम् चढ़ाते रहे।

एक्जिट पोल कहते कि इनको तीन-चार सीट मिल जाएं तो गनीमत, और जब परिणाम आए तो भैया जी जीरो पर आउट!

हा हंत! यह कैसा अंत कि कल चमन था, आज इक सहरा हुआ, देखते ही देखते ये क्या हुआ...

फिर भी हे पीएम के मटीरियल जी! आपकी जय हो कि भीषणताओं से भरपूर इस चुनाव के बीच भी आपने कुछ बढ़िया कॉमिक सीन दिए!

एक्जिटों ने कह दिया था कि प्लीज अब आप लाइन लगा कर एक्जिट करें, लेकिन विपक्ष को शालीनता से एक्जिट करना नहीं आया! खिसियानी बिल्लियां देर तक खंभे नोंचती रहीं!

अंत में अपने 'एक्जिट' का ठीकरा विपक्ष ईवीएम के सिर फोड़ने लगा। देखते-देखते बाईस के बाईस दल कहने लगे कि ईवीएम खोटी है, ईवीएम खोटी है। जब दिखते, बाईस दिखते। हाथ मिलाते, हाथ उठाते, हंसते-हंसते फोटो खिंचाते और बात करो तो धाड़ मार कर रोने लगते कि हमें हराया जा रहा है। ईवीएम हमें हराएगी।

चुनाव आयोग के पुराने अधिकारी और तकनीकी विशेषज्ञ कहते रहे कि भैए, ईवीएम में सेंध लगाना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है और ये क्या बता हुई कि आप जीतें तो ईवीएम ओके और हारें तो रोने लगें कि उनमें खोट है। वो 'हैक' कर ली गई हैं। एक चैनल चर्चक ने कहा भी कि इसे कहते हैं 'नाच न जाने आंगन टेढ़ा!' ऐसा मनमाना 'पोस्ट ट्रुथ' चलने वाला नहीं।

इसके बाद चुनाव परिणाम थे, जिनको हर चैनल अपने सबसे 'अच्छा मेरा चुनाव' कह कह कर दिखाता और बेचता रहा।

कुछ एंकरों को छोड़ बाकी चैनलों के एंकरों और रिपोर्टरों के चेहरे परिणामों के साथ-साथ खिलते रहे। हां, एक चैनल अवश्य मुरझाता-सा दिखा। त्राहि-त्राहि का स्वर यहीं से उठा!

परिणाम आते रहे। एक ओर लड्डू लुटते रहे, दूसरी ओर चेहरे लटकते रहे! एक चैनल चिंतामग्न हुआ कि कहीं अब भारत हिंदू राष्ट्र न बन जाए! एक पत्रकार बोलीं कि एक दल का ऐसा वर्चस्व चिंताजनक है। एक विशेषज्ञ बोले कि यह 'हिंदुत्व' नहीं, 'मोदीत्व' की जीत है।

पूछा गया कि 'मोदीत्व' माने क्या? तो एक पत्रकार बोलीं कि मोदीत्व माने विकास। मोदीत्व माने मजबूत सरकार। मोदीत्व माने वो क्या कि घर मे घुस कर मारेंगे यानी सुरक्षा की गारंटी...

एक विशेषज्ञ बोले कि यह चुनाव न जात पर है न पांत पर, बल्कि विकास पर और राष्ट्र पर लड़ा गया है, इसलिए जात-पांत की बात छोड़ो!

बाकी साफ हुआ भाजपा कार्यालय से सीधे प्रसारित धन्यवाद भाषण में, कि यह चुनाव देश की एक सौ तीस कोटि जनता का चुनाव है... यह चुनाव एक सौ तीस करोड़ देशवासियों को सभी मुसीबतों से मुक्त कर भारत को एक विकसित और समृद्ध भारत बनाने के लिए है... कि इस चुनाव में सेक्युलरिज्म स्वाहा हो गया... कि अब दो ही जातियां बची हैं। एक गरीब, दूसरी वो जो गरीबों की गरीबी दूर करने का काम करे...

चुनाव परिणाम के दिन हर चैनल 'मोदीमय' रहा! किसी चैनल के लिए यह चुनाव 'सुनामी' था, तो किसी के लिए 'मोदी स्वीप' था, तो किसी के लिए 'मोदीत्व की विजय' था। यह 'मोदी युग' है प्यारे!

परिणाम वाले दिन ही एक चैनल में एक नया कोरस बजने लगा : 'रामराज्य की करो तैयारी! आ रहे हैं भगवाधारी!' इस 'भगवा गीत' के स्पांसर का नाम नजर न आया!

कहीं यह किसी नए 'भगवायुग' का जयगान तो नहीं!

बाखबर

■ सुधीश पचौरी

परिणाम आते रहे। एक ओर लड्डू लुटते रहे, दूसरी ओर चेहरे लटकते रहे! एक चैनल चिंतामग्न हुआ कि कहीं अब भारत हिंदू राष्ट्र न बन जाए! एक पत्रकार बोलीं कि एक दल का ऐसा वर्चस्व चिंताजनक है। एक विशेषज्ञ बोले कि यह 'हिंदुत्व' नहीं, 'मोदीत्व' की जीत है।

नई दिल्ली